दक्षिण - पूर्व एशिया के भारतीयकरण के कारण और मार्ग/Beginning of Contact with India

Dr. Dilip Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Ancient Indian History & Archaeology,
Patna University, Patna
Paper – CC-VI, Sem. – II

दक्षिण - पूर्व एशिया के साथ भारत का सम्बन्ध अति प्राचीन काल से मधुर रहा है । इन प्रदेशों में भारतीय संस्कृति के विस्तार को 'भारतीयकरण' की संज्ञा दी गई है । ब्यापार में इन प्रदेशों से भारतीय ब्यापारियों को काफी अधिक मुनाफा प्राप्त होना और साथ ही साथ यहाँ की खानों से सोना का प्राप्त होना, के कारण भारतीयों ने इसे सुवर्णभूमि या सुवर्णद्वीप नाम दिया । यद्धपि वर्तमान में इन प्रदेशों को "आशियान देश" के नाम से जाना जाता है । दक्षिण - पूर्व एशिया के अंतगर्त बरमा, मलायीसिया, इंडोनेशिया, सियाम, कम्बोडिया, लाओस, वियतनाम और फिलीपींस आदि प्रदेश आते है ।

ई. पू. छठी शताब्दी से प्रथम शताब्दी (अर्थात बौद्ध काल, मौर्य काल, शुंग काल आदि) तक दक्षिण - पूर्व एशिया के प्रदेशों से भारत का सम्बन्ध ब्यापारिक था, जो शनै: शनै: सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का रूप धारण कर इन प्रदेशों में भारतीय सम्यक संस्कृति के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया जिसकी झलक वर्तमान समय तक दृष्टिगोचर होती है । दक्षिण - पूर्व एशिया के भारतीयकरण हेतु भारतीय द्वारा अपनाये गए कारण एवं मार्ग को निम्नलिखित बिंदुओं के आलोक में समझा जा सकता है :-

(१) ब्यापारियों की भूमिका:- भारत और दक्षिण - पूर्व एशिया के बीच सम्बन्ध को स्थापित करने का कार्य निःसंदेह भारतीय ब्यापारियों को जाता है । बौद्ध ग्रन्थ जातक, कौटिल्य अर्थशास्त्र एवं संस्कृत कथा साहित्य आदि ग्रंथों से पुष्टि होती है कि भारतीय ब्यापारी अदम्य, उत्साही एवं साहसी थे, जो अधिक मुनाफा एवं स्वर्ण प्राप्ति हेतु सुदूर पूर्व के अनेकानेक अज्ञात स्थल की खोज कर उनको ब्यापारिक क्षेत्र में परिणत किया । ये प्रदेश अपनी आर्थिक सम्पन्नता के कारण न सिर्फ भारतीयों को वरन परवर्ती काल (8वीं - 10वीं शताब्दी) के अरब शासकों को भी आकर्षित किया ।

व्यापार हेतु भारत और दक्षिण - पूर्व एशिया अर्थात दोनों तरफ के ब्यापारी एवं नाविकों का आना जाना होता था । प्रारंभ में ब्यापार और कालक्रम में, ब्यापार और धर्म प्रचार आदि के क्रम में मुख्यतः तीन प्रकार के मार्गो का प्रयोग किया जाता था:-

जल मार्ग :- भारतीय ब्यापारी जल मार्ग के द्वारा दक्षिण - पूर्व एशिया के प्रदेशों द्वारा ब्यापारिक रिश्ता कायम कर अपनी (भारत) संस्कृति का प्रसार - प्रचार किया । जल मार्ग के रूप में गंगा नदी, बंगाल की खाड़ी एवं अरब सागर का प्रयोग किया जाता था ।

उत्तर भारत के ब्यापारी गंगा नदी मार्ग से पहले ताम्रलिप्ति तत्पश्चात अंडमान द्वीप के उत्तरी भाग से होते हुए मलाया प्रायद्वीप पहुचते थे, जहां मलक्का (ऋा) जलडमरूमध्य के समीपवर्ती इलाकों में अनेक बंदरगाह होते थे । दूसरा मार्ग भारत के पूर्वी भाग अर्थात बंगाल की खाड़ी को पार कर सीधे मलाया पहुचने का था और तीसरा मार्ग सिंहल (श्रीलंका) से निकोबार द्वीप के दक्षिणी भाग होते हुए मलाया पहुँचता था । मलाया प्रायद्वीप से दक्षिण - पूर्व एशिया के अनेक प्रदेशों तक जाने के विभिन्न मार्गों का प्रयोग किया जाता था जिसमें सबसे सुरक्षित मार्ग था - मलक्का (ऋा) के जलडमरूमध्य के समीप बंगाल की खाड़ी के पूर्वी तट पर जहाँ अनेक बंदरगाह स्थित थे, वहाँ अपने ब्यापारिक माल को उतारकर बाजार को भेज दिया जाता था । इस मार्ग प्रयोग करने पर समुद्री तूफ़ान और जलदस्यु का भय नहीं रहता था।

स्थल मार्ग :- भारत के पूर्वी भाग में असम, उतरी वर्मा यनम तक ब्यापार हेतु स्थल मार्ग विकसित थे, जिसके द्वारा ब्यापारी सम्पूर्ण उतरी भाग, चीन, अफगानिस्तान होते हुए बक्ट्रिया तक ब्यापार करते जिसका साक्ष्य चीनी श्रोतो से ज्ञात होता है । वर्मी श्रोतो से ज्ञात होता है कि भारत और वर्मा के बीच अकारान होते हुए कई स्थल मार्ग थे जहा से ब्यापारिक रिश्ता कायम था । भारतीय प्रायः उतरी भारत के क्षेत्रों को पार कर वर्मा आकर वहाँ से पूरब की ओर क्रमशः थाईलैंड, कम्बोडिया आदि देश होते हुए मलाया तक स्थल मार्ग से ही चले जाते थे। ब्यापार हेतु भारतीयों ने असम से चीन होते हुए यूनान तक स्थल मार्ग द्वारा यात्रा करते थे और उन्होंने इस मार्ग में गांधार नामक एक उपनिवेश भी स्थापित कर लिया था जो कालांतर में ब्यापारिक केन्द्र के रूप में परिणत हुआ।

अंशतः जल व अंशतः स्थल मार्ग :- भारतीय ब्यापारी दक्षिण - पूर्व एशिया के प्रदेशों के साथ ब्यापार हेतु भारत से गंगा नदी, बंगाल की खाड़ी एवं अरब सागर जैसे जलमार्गों का प्रयोग कर अपने ब्यापारिक माल को मलाया प्रायद्वीप तक पहुचाते थे । तत्पश्चात वहाँ से विभिन्न स्थल मार्गों का अनुसरण कर दक्षिण - पूर्व एशिया के अन्य प्रदेशों यथा सियाम, कम्बुज, इण्डोनेशिया, लाओस आदि तक पहुचाते थे। इन मार्गों के प्रयोग से ब्यापारियों को काफी मात्रा में धन उपार्जन होता था ।

इस प्रकार हम देखते है कि भारत और दक्षिण - पूर्व एशिया के बीच सम्बन्ध तो ब्यापार हेतु कायम हुए थे किन्तु ब्यापार के साथ साथ दक्षिण - पूर्व एशिया के निवासी भारतीयों के संपर्क में आये और भारतीय संस्कृति को अंगीकार किये ।

(२) विद्वानों / धर्म प्रचारकों की भूमिका:- भारतीय विद्वानों ने धर्म प्रचार हेतु बाद में उन्ही रास्तों का प्रयोग किया जिन मार्गों का प्रयोग भारतीय ब्यापारी दक्षिण - पूर्व एशिया के प्रदेशों में ब्यापार के लिए करते थे । साक्ष्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि भारत से पहले पहल जिस धर्म का प्रसार दक्षिण - पूर्व एशिया के देशों में हुआ वह बौद्ध धर्म था । तत्पश्चात शैव धर्म, वैष्णव धर्म एवं अन्य धर्मों का प्रचार-प्रसार हुआ।

मौर्य काल में सम्राट अशोक के धम्म निति के कारण भारत से बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ। सम्राट अशोक के समय आचार्य उपगुप्त के नेतृत्व में सोण और उत्तर नाम के स्थविरों को सुवर्णभूमि बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु भेजा गया था। ये स्थविर चिकित्सक भी थे जिन्होंने भारतीय चिकित्सा पद्धति के द्वारा वहाँ के निःसंतान राजा को पुत्र प्राप्त कराया था, जिसका प्रमाण महावंश में उपलब्ध है ।

कम्बोडिया का फूनान राज्य कौण्डिन्य नामक एक ब्राह्मण के द्वारा स्थापित किया गया था । भारतीय विद्वानों, ऋषि - महर्षियों एवं स्थविरों ने जब इन प्रदेशों में धर्म प्रचार के लिए गए तो उन्हें ज्ञात हुआ कि वहाँ के निवासी सभ्यता संस्कृति में काफी पिछड़े हुए है फलतः उन्हें सभ्यता का पाठ पढाया । कुछ विद्वान (धर्म प्रचारक) वहीं बस गए और वहीं की महिलाओं से विवाह सम्बन्ध स्थापित कर लिया फलतः संकर जातियों का उदय हुआ एवं ऐसे अनेक उपनिवेशों की स्थापना की । भारतीय संस्कृति की गाथा वर्तमान समय तक दृष्टिगोचर होती है ।

(२) शासकों की भूमिका :- उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि दक्षिण - पूर्व एशिया के क्षेत्रों में ऐसे अनेक उपनिवेश स्थापित हुए जिसकी स्थापना भारतीय क्षत्रिय राजवंशो के कुमारों ने की, उदाहरणार्थ - कम्बोडिया, वियतनाम, मलाया, वर्मा आदि । ऐसी संभावना है कि भारत में विदेशी आक्रमणों (यथा - शक, यवन, कुषाण आदि) के कारण कई राज्यों का लोप हो गया और यहाँ के शासकों, राजकुमारों आदि ने नई भूमि पर शरण लेने हेतु इन प्रदेशों में कई उपनिवेश स्थापित किये और भारतीय संस्कृति का प्रसार किया ।

निष्कर्ष :- उपयुक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर हम देखते है कि दक्षिण - पूर्व एशिया के भारतीयकरण में यहाँ के ब्यापारी धर्म प्रचारक,, शासक वर्ग एवं कई कारणों का योगदान है जिसके कारण भारतीय संस्कृति का विस्तार उन सुदूर प्रदेशों तक संभव हो पाया। इन प्रदेशों को वर्तमान समय में आशियान देश के नाम से जाना जाता है जिसकी आर्थिक सम्पन्नता व अवसर की बेहतर संभावना के कारण विश्व के सभी देश इसके साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करना चाहते है ।